पीयर रिव्यूड हिन्दी तिमाही पत्रिका

पतहर

UPHIN/2016/67435
ISSN-2456-0413

सितम्बर 2022 मूल्य 30 रूपये

डा0 डी0एम0 मिश्र की ग़ज़लें

दाना डाल रहा चिड़ियों को मगर शिकारी है
आग लगाने वाला पानी का व्यापारी है

मछुआरे की नीयत खोटी तब वो समझ सकी
कँटिया में जब हाय फँसी मछली बेचारी है

लोग कबूतर बनकर खाली टुक –टुक ताक रहे
उसकी जुमलेबाजी में कितनी मक्कारी है ?

रंग बदलने वाली उसकी फ़ितरत भी देखी
वो गिरगिट सा मतलब से ही रखता यारी है

यारो मरने की ख़ातिर तो दहशत ही काफ़ी
मान लिया कोरोना इक घातक बीमारी है

काँटे अपने आप उगे हैं होगी बात सही
फिर भी माली की भी तो कुछ जिम्मेदारी है

उसके बारे में इससे ज़्यादा क्या और कहूँ ?
लोग यही बस देख रहे हैं सूरत प्यारी है

हवा में है वो अभी आसमान बाक़ी है
अभी परिन्दों की ऊँची उड़ान बाक़ी है।

अभी तो उम्र के पन्ने पलट रहा है वो
अभी तो ज़िंदगी की दास्तान बाक़ी है।

नज़र में आपकी कंगाल हम भले ठहरे
हमारे पास अभी स्वाभिमान बाक़ी है।

बना लिया है चार –छै मकान शहरों में
अमीर हो गया सारा जहान बाक़ी है।

बड़ी अदा के साथ हुस्न ने ललकारा हे
अभी तो तीर है देखा, कमान बाक़ी है ।

करो हज़ार वार हमको डर नहीं लगता
लड़ेंगे जुल्म से जब तक कि जान बाक़ी है।

मेरे मोहसिन अकेले दम पे कुछ नहीं होगा
सुबह हुई है ,पर उसकी अज़ान बाक़ी है।

–डॉ. डी0एम0 मिश्र
सुल्तानपुर
मोबाइल 9415074318

चन्द्रमुखी

यह वह समय था
जब मैं आया था पहली बार
शहर
गांव से पढ़ने।
यह वह समय था
जब गांव से आते थे लोग
शहर
पढ़ने, दवाई कराने या कचहरी लड़ने
मुकदमा।
यह वह समय था
जब
शहर
नहीं पहुंचा था गांव में,
फैसन,टीवी, मोबाइल, सड़क, चुनाव के
रास्ते,
तब रिश्ते दूर और पास के नहीं सिर्फ
रिश्ते थे
और गांव के नाम से जुड़े थे।
जाति– धरम था, छुआ–छूत थी,
ऊंच–नीच था,
शोषण उत्पीड़न था
और बहुत कुछ था
जो था बहुत बुरा था
सब कुछ था
फिर भी गांव था
और गांव का नाम था
औरतें थीं जिनका नाम नहीं था
उनकी पहचान अपने गांव के नाम से
थी।
इसी के सहारे रिस्ते थे
बेमेल और बेमिसाल।
इसी सहारे एक पुल था जो हर खाईं
के साथ था।
यही वह समय था
जब देखा था 'चंद्रमुखी' को
संज्ञा था
या विशेषण कौन कहे
गंवई मन
अकबकाया देख रहा था शहर और
चंद्रमुखी को
सरसों के खेत और तीसी का फूल,
धान की महक और सावन की फुहार,
चपल नदी की धार
और रोपनी के गीत,
खरिहानी का खज़ाना
और
बीच मझधार में जैसे झिझिया खेलती
नांव।
पहली बार ऐसा हुआ कि
कुछ नहीं सूझा,
कहने के लिए
बस एक मौन था
जो बना है आज तक

– राजेश मल्ल, आचार्य हिन्दी विभाग,
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
मोबाइल 9919218089

ISSN-2456-0413

पीयर रिव्यूड
हिन्दी तिमाही पत्रिका

पतहर

वर्ष 07 अंक 03
जुलाई–सितम्बर 2022
मूल्य 30 रूपये पेज–60

सम्पादक
विभूति नारायण ओझा

सम्पादक मण्डल
डा0 विक्रम मिश्र
डॉ उन्मेष कुमार सिन्हा
डॉ विजय आनंद मिश्र
डॉ कमलेश कुमार यादव
डॉ संदीप कुमार सिंह

Email-hindipatahar@gmail.com
Mo-09450740268
http://patahar.blogspot.com/?m=1
https://www.patahar.in/
www.notnul.com

आवरण प्रीता व्यास

पतहर, स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक विभूति नारायण ओझा द्वारा ज्योति ऑफसेट प्रेस सलेमपुर देवरिया से मुद्रित एवं कार्यालय ग्राम बहादुरपुर पोस्ट बड़हरा(खुखुन्दू) जिला देवरिया से प्रकाशित।
सम्पादक–विभूति नारायण ओझा

प्रकाशित सामग्री से सम्पादक/प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवादास्पद मामले देवरिया न्यायालय के अधीन होगा।

UPHIN/2016/67435

इस अंक में

4. अपनी कलम
आवरण आलेख
5. रेत समाधि हिन्दी के लिए आशा की किरण/प्रो0 अंजुमन आरा
7. रेत समाधि यथार्थ की सीमाएं और संभावनाएं/स्वदेश सिन्हा
8. रेत समाधि को बुकर पुरस्कार स्त्री संवेदना/भगवान स्वरूप कटियार
10. श्री की बदौलत हिन्दी साहित्य में उत्सव/अनुराधा उपाध्याय
11. बुकर में हिन्दी की जीत/हिमांशु त्रिपाठी
संस्मरण
12. आध्यात्मिकता के प्रतिमूर्ति बाबा विश्वनाथ ओझा/विभूति नारायण
14. हमारी यादों में हमेशा रहेंगे कामरेड विश्वम्भर/चक्रपाणि
16. व्यक्तित्व के धनी डा. रूद्रदत्त/डा. अनुरक्ति चतुर्वेदी
शोध–पत्र
18. रामवृक्ष बेनीपुरी :
राजनीतिक एवं समाजवादी विचारधारा/संतोष कुमार त्रिपाठी
20. हिन्दी उपन्यासों में नारी विमर्श/एकता पाण्डेय
24. संवेदना एवं हिन्दी साहित्य/प्रीति सिंह
28. कुबेरनाथ राय के ललित निबंधों में
बिम्ब–बिधान/अशोक कुमार शर्मा
31. अमरकांत : आम आदमी के कथाकार/गोविन्द लाल
आलेख
33. रेणु की रचनाओं में गांव/डॉ. रंजना जायसवाल
लघु कथा
15. सबसे घातक कौन?/वैदेही कोठारी
35. अबोला सत्य/कल्पना मनोरमा
पुस्तक समीक्षा
36. दृश्य से अदृश्य का सफर/पंकज सुबीर
39. संतोष चौबे की कहानियों में सामाजिक सरोकार/डॉ. संदीप कुमार
42. एक हजार साल बाद की दुनिया/तेजस पूनिया
44. असहमति में उठे हाथ/तंजीला तासीर
कहानी
47. वसीयत/डॉ. दलजीत कौर
49. रिश्ते का पंचनामा/श्यामल बिहारी महतो
51. तिरंगा/मीनल
53. शापित/मीना पाठक
कविता/गज़ल
आवरण पृष्ठ/राजेश मल्ल/डा0 डी.एम. मिश्र
9. गौरव पाण्डेय
13/30. नेहा ओझा/34. दिवाकर पाण्डेय/35. नरेश अग्रवाल
52. प्रेमलता मुरार/57. श्रीधर मिश्र
व्यंग्य
58. बैठक/चित्रगुप्त
रिपोर्ट : 17/32/

खाता विवरण : पतहर खाता सं. 98742200010701 IFSC. CNRB0019874 केनरा बैंक, खुखुन्दू, देवरिया

साहित्यिक संवाद के लिए पाठकों तक पहुँचना होगा

बीते वर्षों में दुनिया जितनी बड़ी क्षति से गुजरी है वह निश्चित ही हैरान,परेशान करने वाली रही है। कोरोना वायरस ने समूचे जनमानस की गति पर विराम लगा दिया था। साहित्यिक पत्रिकाओं पर भी इस संकट का गहरा प्रभाव पड़ा है। अनेक पत्रिकाओं ने इस दौर में अपना पीडीएफ (ऑनलाइन अंक) प्रकाशित करना भी शुरू कर दिया क्योंकि इनके सामने और कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था अपने पाठकों तक पहुंचने का, ऐसे समय में ऑनलाइन माध्यमों के जरिए पाठकों से जुड़ाव का प्रयास था ताकि घरों में रह रहे पाठकों को पठनीय सामग्री सहजता से उपलब्ध करा सकें। साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में ऑनलाइन माध्यमों का प्रवेश संकट के दौर में शुरू हुआ था लेकिन अब जब कोरोनावायरस समाप्त हो चुका है, सब कुछ सामान्य हो गया है तब एक बार फिर लगभग सभी पत्रिकाओं ने अपना अंक पाठकों के हाथ में सौंपने को तैयारी कर ली हैं।

पतहर भी लंबे समय से अनेक झंझावातों का सामना करते हुए अपने पाठकों तक पहुंचने के प्रयास में है। अपने पाठकों व शुभचिंतकों का सहयोग हमें पूर्व की भांति मिलेगा ऐसी हमें पूरी उम्मीद है। हमारा मानना है कि साहित्यिक संवाद या पत्रकारिता ऑनलाइन माध्यमों से अधिकाधिक लोगों तक पहुंच भले बना रही हो लेकिन वह पहुंच स्थायित्व प्रदान करने वाला नहीं हो सकता। सभागार में होने वाले सेमिनार की जगह मोबाइल पर होने वाले वेबीनार कभी नहीं ले सकते और ना ही श्रोताओं में सार्थक प्रभाव पैदा कर पाएंगे। हाथ में लेकर अखबार या पत्रिका पढ़ने का जो सुखद एहसास होता है वह मोबाइल या दूसरे माध्यमों से पाठकों को नहीं मिल सकता। लोगों से क्षणिक जुडाव का माध्यम बहुत लंबे समय तक जारी नहीं रखा जा सकता है। यह सच है कि तकनीक के इस दौर में हमें उसका लाभ अवश्य लेना है लेकिन हमें अपने तौर–तरीकों से पाठकों तक पहुंच बनाने का प्रयास नहीं छोड़ना चाहिए। यह भी सच है कि ऑनलाइन माध्यमों ने महंगाई के इस दौर में हमारा बहुत हद तक सहयोग किया है हमारे आयोजनों में होने वाले खर्चों,पत्रिकाओं के प्रकाशन और वितरण में होने वाले खर्चों को कम किया है लेकिन इसका दुष्प्रभाव यह हुआ है कि हम पाठकों और श्रोताओं को काफी हद तक प्रभावित करने में असफल रहे हैं।ऑनलाइन माध्यमों ने हमारा प्रचार–प्रसार तो खूब किया है लेकिन न तो हम नए व गंभीर पाठक तैयार कर पाए हैं और न ही भारी मात्रा में होने वाले वेबीनारों ने कोई स्थाई छवि किसी श्रोता पर बनाया है। सभागार में आयोजित संगोष्ठियां वर्षो तक लोगों के जेहन में सुरक्षित रहती हैं,वक्ताओं के महत्वपूर्ण विचार श्रोताओं को लंबे समय तक स्मरण रहते हैं,जबकि मोबाइल पर होने वाले वेबीनार समाप्त होने के बाद श्रोताओं के दिमाग से भी कुछ घंटे बाद गायब हो जाते हैं। विद्वानों के बहुमूल्य विचार जो कि नए पाठकों,श्रोताओं के लिए संग्रहणीय होते हैं वह अपना प्रभाव उन तक पहुंचाने में बहुत सफल नहीं होते ।

तकनीकी व ऑनलाइन माध्यमों का सार्थक इस्तेमाल करते हुए हमें एक बार फिर सभागार और पत्रिकाओं की तरफ लौटना होगा अगर हमें साहित्यिक पत्रकारिता व साहित्य को वास्तव में आम जन तक पहुंचाना है तो इस ऑनलाइन की मकड़जाल से बाहर निकलकर साहित्य को पाठकों के हाथों में पहुंचाना होगा, तभी वास्तव में हम साहित्य का कुछ भला कर सकेंगे अन्यथा आत्म प्रचार व आत्ममुग्धता के ही शिकार बनें रहेंगे।

पतहर के इस नवीनतम अंक में हम अपने पाठकों को अनेक नवोदित रचनाकारों की लेखनी से रूबरू करा रहे हैं तो वहीं अनेक ख्याति लब्ध रचनाकारों को भी पूरे आदर के साथ प्रकाशित कर रहे हैं। कविता,कहानी,आलेख,व्यंग्य, समीक्षा व साहित्यिक रिपोर्ट इस अंक में विशेष रुप से प्रकाशित किए जा रहे हैं। कविता/गज़ल के अंतर्गत डा. डी.एम. मिश्र, राजेश मल्ल, प्रेमलता मुरार, नेहा ओझा, गौरव पाण्डेय की कविताएँ शामिल हैं वहीं कहानी में डा दलजीत कौर, श्याम विहारी महतो, मीनल, मीना पाठक की कहानी को इस अंक में जगह मिली है। साथ ही बुकर पुरस्कार प्राप्त गीतांजलि श्री पर आवरण आलेख के अन्तर्गत प्रो0 अंजुमन आरा, स्वदेश सिन्हा, भगवान स्वरूप कटियार सहित डा रंजना जायसवाल के महत्वपूर्ण आलेख भी शामिल हैं।

संपादकीय टीम को भी मजबूत किया गया है, पीयर रिव्यूड सामग्री देने का प्रयास किया गया है, इस दृष्टि से शोध पत्रों को भी शामिल किया गया है।

प्रिय पाठकों, शुभचिंतकों का सहयोग व मार्गदर्शन ही पत्रिका को निरंतरता प्रदान करेगा, आप पतहर को और बेहतरीन बनाने में अपनी भूमिका अदा कर सकते हैं। हमें आप के सहयोग और सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी।

(विभूति नारायण ओझा)
संपादक